सीरी में प्रथम निदेशक पद्म भूषण डॉ अमरजीत सिंह का सम्मान

सीएसआईआर-केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी), पिलानी के प्रथम निदेशक पद्म भूषण डॉ अमरजीत सिंह के 90वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में संस्थान में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। आयोजन की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर ने की। कार्यक्रम का उद्देश्य संस्थान के सभी सहकर्मियों विशेषकर युवा व नवनियुक्त साथियों को डॉ सिंह के जीवन व उपलब्धियों की जानकारी देते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित करना था। इस अवसर पर संस्थान के सहकर्मियों के अतिरिक्त डॉ सिंह के परिजन, संस्थान के सेवानिवृत्त सहकर्मी, बिट्स निदेशक प्रो. जी रघुराम, बिट्स डिस्टिंग्विश्ड एलुमिनस डॉ कृष्णा सारस्वत व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

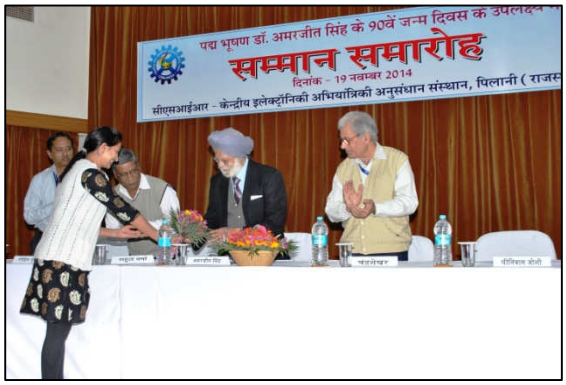

सीरी के प्रथम निदेशक पद्म भूषण डॉ अमरजीत सिंह का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करती हुई सहकर्मी

डॉ अमरजीत सिंह ने इस अवसर पर संस्थान में बिताए अपने समय को याद करते हुए अपने सभी पूर्व सहकर्मियों के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। अपने संक्षिप्त उदबोधन में उन्होंने संस्थान के सभी सहकर्मियों से अपना ध्येय तय करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अपना ध्येय या लक्ष्य तय किए बिना हम न तो प्रगति कर सकते हैं और न ही अपने संगठन और देश के विकास में योगदान दे सकते हैं। इस संबंध में उन्होंने महाभारत के नायक अर्जुन का संदर्भ देते हुए कहा कि हमें अपने लक्ष्य पर अर्जुन की ही भाँति इस प्रकार ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि हमें केवल "मछली की आँख" ही दिखाई दे। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों पर प्रसन्नता व्यक्त की और नए कीर्तिमान स्थापित करने के लिए शुभकामना दी।

श्रोताओं को संबोधित करते हुए डॉ अमरजीत सिंह

संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर ने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में डॉ सिंह, श्रीमती सिंह व उनके पुत्रों व पुत्रवधू सहित बिट्स पिलानी के पूर्व विशिष्ट छात्र (डिस्टिंग्विश्ड एलुमिनस) प्रो. कृष्णा सारस्वत, प्रो. जी रघुराम, निदेशक, बिट्स, पिलानी तथा इस अवसर पर विशेष रूप से आमंत्रित संस्थान के पूर्व सहकर्मियों व संस्थान के वर्तमान सहकर्मियों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने कहा कि उनकी क्षमता इतनी नहीं है कि वे डॉ सिंह को उनके 90वें जन्म दिवस पर बधाई दें, अत: वे इस अवसर पर उन्हें श्रद्धा से नमन करते हैं। उन्होंने कहा कि सूक्ष्मतरंग नलिका शोध के क्षेत्र में आज भी डॉ सिंह का कोई सानी नहीं है और यह हमारा सौभाग्य है कि हमें डॉ सिंह के मार्गदर्शन में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि यद्यपि संस्थान की आधारशिला 21 सितंबर

1953 को तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने रखी थी परंतु शोध कार्यों की शुरुआत संस्थान में डॉ सिंह द्वारा मैग्नेट्रॉन सूक्ष्मतरंग नलिका के क्षेत्र से ही हुई। अपनी स्थापना के आरंभिक वर्षों में शोध सुविधाएँ जुटाने से लेकर मानव संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित करने और उसके विकास व अभिवृद्धि में डॉ सिंह का सतत योगदान व संघर्ष हमारे लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने बताया कि डॉ सिंह सदैव सिद्धांतवादी रहे और उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। कार्य के प्रति उनकी निष्ठा व समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणादायी रहे हैं। उन्होंने कहा कि डॉ सिंह अभी भी पूरी तन्मयता से शोधरत हैं और अपने ज्ञान व अनुभव से युवा शोधार्थियों को लाभान्वित कर रहे हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ चंद्रशेखर,
निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

डॉ चंद्रशेखर ने इस अवसर पर पुरानी स्मृतियों को याद करते करते हुए डॉ अमरजीत सिंह के पिलानी आगमन की रोचक कहानी को सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं से साझा किया। उन्होंने बताया कि सीएसआईआर के तत्कालीन महानिदेशक व अन्य चिंतक इस बात से चिंतित थे कि पिलानी में नई प्रयोगशाला की स्थापना तो की जा रही है परंतु दुर्गम मार्गों से होकर पिलानी पहुँचना सरल नहीं है। ऐसी स्थिति में पिलानी कौन जाना चाहेगा। तत्कालीन महानिदेशक ने इस संबंध में राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला के तत्कालीन निदेशक डॉ के एस कृष्णन से चर्चा की और तब डॉ कृष्णन ने अपने सबसे योग्य वैज्ञानिक डॉ अमरजीत सिंह को पिलानी में इस संस्थान का दायित्व सँभालने का चुनौती भरा कार्य सौंपा जिसे डॉ सिंह ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। डॉ चंद्रशेखर ने बताया कि यह वास्तव में हमारा सौभाग्य है कि हमें डॉ सिंह जैसा अत्यंत परिश्रमी व सुयोग्य नेतृत्व मिला। उन्होंने बताया कि डॉ सिंह ने राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला(एनपीएल), नई दिल्ली में मैग्नेट्रॉन पर किए जा रहे शोध कार्य को संस्थान में आरंभ किया और धीरे-धीरे संस्थान में सूक्ष्म तरंग नलिका प्रभाग स्थापित हुआ। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी सुविधाएँ जुड़ती गईं और संस्थान एक विशिष्ट इलेक्ट्रॉनिकी प्रयोगशाला के रूप में स्थापित हो गया। डॉ सिंह अपने ज्ञान को बदलते समय के अनुरूप रखने तथा अद्यतन करने में विश्वास रखते थे। इसके लिए वे इलेक्ट्रॉनिकी के नए शोध क्षेत्रों में ज्ञान अर्जित करने अमेरिका गए और वर्ष 1962 में चीन के भारत पर आक्रमण के समय वापस लौट आए।

सम्मान-समारोह के दौरान सभागार में उपस्थित
अतिथिगण व सहकर्मी

इलेक्ट्रॉनिकी में 'अर्ली इफेक्ट' की चर्चा करते हुए उन्होंने डॉ सिंह के प्रसिद्ध वैज्ञानिक जिम अर्ली के साथ हार्वर्ड विश्वविद्यालय में बिताए समय की भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि विदेश से लौट कर डॉ सिंह ने जिम अर्ली के सौजन्य द्वारा विश्वविख्यात बेल टेलिफोन लैबोरेटरीज़ से प्राप्त जानकारी व ज्ञान की

सहायता से वर्ष 1962 में संस्थान में अर्द्धचालक युक्तियाँ प्रभाग की स्थापना की। डॉ सिंह के मार्गदर्शन में ही संस्थान में टेलिविज़न टेक्नोलॉजी की शुरुआत हुई। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान के विभिन्न शोध क्षेत्रों की प्रगति में डॉ सिंह के अविस्मरणीय योगदान की चर्चा की। उन्होंने बताया कि डॉ सिंह सदैव नए क्षेत्रों में शोध करना चाहते थे और अपनी योग्यता को निरंतर विस्तार देना चाहते थे। उन्होंने बताया कि डॉ सिंह को सदैव नई चुनौतियों का सामना करने में आनंद आता था। उन्होंने कहा कि मैं स्वयं भी 1975 में संस्थान से वरिष्ठ शोधार्थी के रूप में जुड़ा था और मुझे गर्व है कि मैंने भी डॉ अमरजीत सिंह और पूर्व निदेशक डॉ डब्ल्यूएस खोकले के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेते हुए सीरी को अपनी कर्मभूमि के रूप में चुना। देश में उस समय चिप-डिजाइन के क्षेत्र में शिक्षण-प्रशिक्षण नहीं होता था। डॉ चंद्रशेखर ने बताया कि डॉ सिंह ने ही उन्हें संस्थान में चिप-डिजाइन, जो उस समय एलएसआई डिजाइन के नाम से जाना जाता था, के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया। डॉ सिंह के सफल वैज्ञानिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति धैर्य, समर्पण, ईमानदारी व कर्तव्यनिष्ठा से कार्य करता है उसे सफलता अवश्य मिलती है और डॉ सिंह का जीवन इसी का उदाहरण रहा है।

अंत में उन्होंने यज्ञ के दौरान की जाने वाली वैदिक प्रार्थना "जीवेम शरदः शतम्, पश्येम् शरदः शतम्, शृणुयाम शरदः शतम्, प्रब्रवाम् शरदः शतम्, अदीनाःस्याम शरदः शतम्, भूयश्च शरदः शतात्"(अर्थात हमारे नेत्रों की ज्योति 100 वर्ष तक बनी रहे, हम 100 वर्ष तक जिएँ, हमारी श्रवण शक्ति 100 वर्ष तक कायम रहे, हमारी वाणी 100 वर्षों तक हमारे साथ रहे, हम 100 वर्षों तक स्वावलंबी व सक्रिय रहें तथा ईश्वर करे कि 100 वर्ष के बाद भी आगामी 100 वर्षों तक हमें ये सभी सुविधाएँ इसी प्रकार मिलती रहें) के माध्यम से उन्होंने डॉ सिंह के स्वस्थ व दीर्घायु होने की कामना की और समय समय पर संस्थान में आकर संस्थान के शोध कार्यों को गुणात्मक मार्गदर्शन व प्रेरणा देने के लिए आभार व्यक्त किया और आशा व्यक्त की कि यह क्रम दीर्घकाल तक यूँ ही चलता रहेगा।

सम्मान समारोह का संचालन करते हुए
डॉ एस एन जोशी, मानद वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरी

संस्थान के मुख्य सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम का **संयोजन व संचालन** करते हुए **मानद वैज्ञानिक डॉ एस एन जोशी** ने सभी सहकर्मियों की ओर से डॉ अमरजीत सिंह, उनके परिजनों तथा सभी उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने सभी श्रोताओं के समक्ष डॉ अमरजीत सिंह की प्रमुख शोध उपलब्धियों का उल्लेख किया। इस अवसर पर डॉ जोशी ने कहा कि हमें इस बात का गर्व है कि हमें डॉ सिंह के नेतृत्व में संस्थान और राष्ट्र की सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया कि डॉ सिंह लगभग 24 वर्ष तक संस्थान के निदेशक रहे। उन्होंने कहा कि अनुशासन, अपने कार्य के प्रति लगन व समर्पण डॉ सिंह के विशिष्ट गुण हैं। उन्होंने बताया कि डॉ सिंह वर्ष 1984 में संस्थान से सेवानिवृत्त हुए परंतु उसके बाद भी उन्होंने सीरी से संबंध बनाए रखा। डॉ जोशी ने डॉ सिंह के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अपने 90वें जन्म

दिवस के अवसर पर आप हमारे बीच में हैं, यह हमारे लिए गर्व की बात है। उनके कार्यकाल के संस्मरण श्रोताओं से साझा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें डॉ सिंह का मार्गदर्शन और आशीर्वाद सदैव मिला है और हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी हमें यह सौभाग्य मिलता रहेगा। उन्होंने पूरे संस्थान की ओर से डॉ सिंह को उनके 90वें जन्म दिवस की हार्दिक बधाई दी।

डॉ सिंह को शॉल व स्मृति चिह्न भेंट करते हुए
डॉ चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

स्मृति चिह्न भेंट

संस्थान के निदेशक डॉ चंद्रशेखर ने डॉ अमरजीत सिंह द्वारा संस्थान को दी गई सेवाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उन्हें शॉल ओढ़ाकर व स्मृति चिह्न भेंट कर आभार व्यक्त किया। साथ ही श्रीमती रंजना चंद्रशेखर ने भी श्रीमती सिंह को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

डॉ अमरजीत सिंह को श्री घनश्याम दास द्वारा तैयार किया गया फोटो एल्बम भेंट करते हुए डॉ चंद्रशेखर

इस अवसर पर उनके जीवन के यादगार पलों से संबंधित एक चित्रावली का प्रस्तुतीकरण भी किया गया। डॉ सिंह को उनके संस्थान में बिताए उनके समय के चुनिंदा चित्रों से युक्त एक एलबम भी भेंट किया गया।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री राहुल वर्मा, प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सीरी

धन्यवाद ज्ञापन

कार्यक्रम के अंत में संस्थान के प्रमुख वैज्ञानिक श्री राहुल वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ सिंह के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की तथा अन्य सभी अतिथियों के इस अवसर पर पधारने के लिए आभार व्यक्त किया।

समारोह के उपरांत डॉ सिंह को केक खिलाते हुए
डॉ चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर- सीरी

इस प्रकार संस्थान द्वारा संस्थान के प्रथम निदेशक पद्म भूषण डॉ अमरजीत सिंह के सम्मान में आयोजित यह समारोह संपन्न हुआ।